शिव चालीसा पाठ

॥ दोहा ॥

जय गणेश गिरिजा सुवन, मंगल मूल सुजान ।
कहत अयोध्यादास तुम, देहु अभय वरदान ॥

॥ चौपाई ॥

जय गिरिजा पति दीन दयाला । सदा करत सन्तन प्रतिपाला ॥ १ ॥
भाल चन्द्रमा सोहत नीके । कानन कुण्डल नागफनी के ॥ २ ॥
अंग गौर शिर गंग बहाये । मुण्डमाल तन क्षार लगाए ॥ ३ ॥
वस्त्र खाल बाघम्बर सोहे । छवि को देखि नाग मन मोहे ॥ ४ ॥
मैना मातु की हवे दुलारी । बाम अंग सोहत छवि न्यारी ॥ ५ ॥
कर त्रिशूल सोहत छवि भारी । करत सदा शत्रुन क्षयकारी ॥ ६ ॥
नन्दि गणेश सोहै तहँ कैसे । सागर मध्य कमल हैं जैसे ॥ ७ ॥
कार्तिक श्याम और गणराऊ । या छवि को कहि जात न काऊ ॥ ८ ॥
देवन जबहीं जाय पुकारा । तब ही दुख प्रभु आप निवारा ॥ ९ ॥
किया उपद्रव तारक भारी । देवन सब मिलि तुमहिं जुहारी ॥ १० ॥
तुरत षडानन आप पठायउ । लवनिमेष महँ मारि गिरायउ ॥ ११ ॥
आप जलंधर असुर संहारा । सुयश तुम्हार विदित संसारा ॥ १२ ॥
त्रिपुरासुर सन युद्ध मचाई । सबहि कृपा कर लीन बचाई ॥ १३ ॥
किया तपहिं भागीरथ भारी । पुरब प्रतिज्ञा तासु पुरारी ॥ १४ ॥
दानिन महँ तुम सम कोउ नाहीं । सेवक स्तुति करत सदाहीं ॥ १५ ॥
वेद नाम महिमा तव गाई। अकथ अनादि भेद नहिं पाई ॥ १६ ॥
प्रकटी उदधि मंथन में ज्वाला । जरत सुरासुर भए विहाला ॥ १७ ॥
कीन्ही दया तहं करी सहाई । नीलकण्ठ तब नाम कहाई ॥ १८ ॥
पूजन रामचन्द्र जब कीन्हा । जीत के लंक विभीषण दीन्हा ॥ १९ ॥
सहस कमल में हो रहे धारी । कीन्ह परीक्षा तबहिं पुरारी ॥ २० ॥
एक कमल प्रभु राखेउ जोई । कमल नयन पूजन चहं सोई ॥ २१ ॥

Paramsoul

शिव चालीसा पाठ

कठिन भक्ति देखी प्रभु शंकर । भए प्रसन्न दिए इच्छित वर ॥ २२ ॥
जय जय जय अनन्त अविनाशी । करत कृपा सब के घटवासी ॥ २३ ॥
दुष्ट सकल नित मोहि सतावै । भ्रमत रहौं मोहि चैन न आवै ॥ २४ ॥
त्राहि त्राहि मैं नाथ पुकारो । येहि अवसर मोहि आन उबारो ॥ २५ ॥
लै त्रिशूल शत्रुन को मारो । संकट से मोहि आन उबारो ॥ २६ ॥
मात-पिता भ्राता सब होई । संकट में पूछत नहिं कोई ॥ २७ ॥
स्वामी एक है आस तुम्हारी । आय हरहु मम संकट भारी ॥ २८ ॥
धन निर्धन को देत सदा हीं । जो कोई जांचे सो फल पाहीं ॥ २९ ॥
अस्तुति केहि विधि करैं तुम्हारी । क्षमहु नाथ अब चूक हमारी ॥ ३० ॥
शंकर हो संकट के नाशन । मंगल कारण विघ्न विनाशन ॥ ३१ ॥
योगी यति मुनि ध्यान लगावैं । शारद नारद शीश नवावैं ॥ ३२ ॥
नमो नमो जय नमः शिवाय । सुर ब्रह्मादिक पार न पाय ॥ ३३ ॥
जो यह पाठ करे मन लाई । ता पर होत है शम्भु सहाई ॥ ३४ ॥
ऋनियां जो कोई हो अधिकारी । पाठ करे सो पावन हारी ॥ ३५ ॥
पुत्र हीन कर इच्छा जोई । निश्चय शिव प्रसाद तेहि होई ॥ ३६ ॥
पण्डित त्रयोदशी को लावे । ध्यान पूर्वक होम करावे ॥ ३७ ॥
त्रयोदशी व्रत करै हमेशा । ताके तन नहीं रहै कलेशा ॥ ३८ ॥
धूप दीप नैवेद्य चढ़ावे । शंकर सम्मुख पाठ सुनावे ॥ ३९ ॥
जन्म जन्म के पाप नसावे । अन्त धाम शिवपुर में पावे ॥ ४० ॥
कहैं अयोध्यादास आस तुम्हारी । जानि सकल दुःख हरहु हमारी ॥ ४१ ॥

॥ दोहा ॥

नित्त नेम कर प्रातः ही, पाठ करौं चालीसा ।
तुम मेरी मनोकामना, पूर्ण करो जगदीश ॥

मगसर छठि हेमन्त ऋतु, संवत चौसठ जान ।
अस्तुति चालीसा शिवहि, पूर्ण कीन कल्याण ॥

ParamSoul